ईश्वर स्वरूप महाराज जी द्वारा

लिखी गई

स्वामी परमानन्द जी की

अमरनाथ यात्रा–लीला

संपादिका : प्रभादेवी जी

कश्मीरी भाषा का हिन्दी रुपांतर

(अनुवादक) – श्री प्रमोद जी शर्मा

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

ईश्वर स्वरूप महाराज जी द्वारा

लिखी गई

स्वामी परमानन्द जी की

अमरनाथ यात्रा–लीला

संपादिका : प्रभादेवी जी

कश्मीरी भाषा का हिन्दी रुपांतर

(अनुवादक) – श्री प्रमोद जी शर्मा

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

भूमिका

आज सदगुरु महाराज के जन्म–दिवस पर हम सुश्री प्रभा देवी जी के लिए हार्दिक भलाई की कामना करते हैं जिन्होंने एक अमूल्य रत्न को छिपाने के विलोम हमारे सम्मुख रख दिया।

हमारे कश्मीर के बहुत पहुंचे हुए सूफी सन्त और विद्वान् श्री परमानन्द ने यह अमरनाथ यात्रा के अनुभव पुष्पों की लड़ी सजाई, भावलीला रची, इस को कौन सा भक्त होगा जिसे यह याद नहीं होगी। परमानन्द जी ने अपने अनुभव की कसौटी पर इस लीला के सोने के टुकड़े को कभी कभी सान पर चढ़ा कर हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है। इसी के साथ सदगुरु जी ने भावरंजित हो कर एक दिन इस कविता को अपने हाथों कागज पर लिखा। दस कविताओं को लिख कर विश्राम किया। तब शारिका देवी जी ने अपने करकमलों से यह लीला अन्त तक लिखी। लीला लिखने के मिस से देवी शारिका जी ने स्वात्म–साक्षात्कार किया।

इस तरीके से यह लीला एक अहम यादगार रहेगी। इसका महत्व कुछ और भी ज्यादा इसलिए की सदगुरु जी ने सुश्री प्रभा देवी जी को आदेश दिया और कहा "प्रभे यह तावीज है और इसे ताविज की तरह ही रखना"।

प्रभा जी ने भी इसे ५० साल संभाल कर रखा और इसका बार–बार उपयोग कर अपने ज्ञान–सागर पर इसका

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGangotri

छिड़काव कर, उसे बढ़ाया।

इस प्रकार अपने हाथों से लिखे तावीज़ को और साथ में श्री शारिका देवी जी के हाथों लिखी हुई इस लीला से हम सब भक्तों पर बड़ा उपकार किया। यह लीला हम सब भक्तों का उद्धार करने के लिए ही हम सब तक पहुंचाई गई है।

हमें आशा है कि प्रभा जी आगे भी हमें अज्ञान के अन्धेरे से रखवाली और उजाले की ओर लेकर जाती रहेंगी।

सदगुरु वाटिका का कोयल
प्रो. मक्खन लाल

सदगुरु महाराज का
जन्म दिवस
१८ अप्रैल
रविवार, १९९३

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

ॐ

देह गुफा सतचित आनन्द लिंग
मन पीठ–स्थान पर बैठा निःसंग
लोग कहें कैलाश श्रंग (चोटी) मं॰ ।।१।।

कान धर वागदेवी क्या कहे
सुन सुन के क्यों अनसूनी करे
नाम रुप भिन्न–भिन्न प्रकटे यहीं मं॰ ।।२।।

त्राहि माम कह यात्रा आरम्भ कर
हरमुख को अपनत्व अर्पण कर
गुफा माप, है दोनों गुफा बराबर मं॰ ।।३।।

पहले तो गणपत यार का गणेश
दूर नही मान है पास तेरे
मूलाधार के द्वार का है महेश मं॰ ।।४।।

ब्रह्मा जो है सृष्टिकर्ता
स्वादिष्ठान वही शुरहयार
षट्‌दल जैसे षट्‌मुख कुमार मं॰ ।।५।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

शिवपुर में घुमा कुण्डलिनी
चलता प्राण साथ ही दूसरे बने
सात सागर जैसा रहस्य है लिए मं० ।।६।।

अष्ट–दल ख़िले कमलदल
मुड़ आ भटक ना इधर उधर
विमर्शकर संसार झील से निकल मं० ।।७।।

चड़ता चल पहुंचना है जहां
अधीर दूर क्यों है पड़ा
गति प्राप्ति की सुन कथा मं० ।।८।।

पग पग पे तीर्थस्थान यहां
वेदों में जैसे विख्यात प्रणव
जीवन मुक्ति दे परमात्मा मं० ।।९।।

कथा है यह अमरनाथ की
देह द्वार शांत एकांत की
शम दम गुफा प्रशान्त की मं० ।।१०।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

नाभि देश है दशदल संगम
जो उत्सुक हो उसी को मिले सत्संग
कृष्ण है स्वयं स्थावर जंगम।। मं॰ ।।११।।

देख मन्दिर चन्द्रयार
वहीं देह अभिमान छोड़ तब ही होवे हरिचन्द्रयार
विजयेश्वरी है जन्म जन्म पर।। मं॰ ।।१२।।

संकल्प छोड़ पहुंच थजवोर
जहां है शिव जटा चारों ओर
अनाहत मंडल में रख *चरण प्रवेश कर।। मं॰ ।।१३।।

मौन रहकर पंहुच जा छोन्डबल
विशुद्धि चक्र का है यह स्थल
**जीवभाव धों दे पूजा कर।। मं॰ ।।१४।।

हंसते खेलते पहुंच जा मध्य धाम
***जीव आत्मा का यह मिलने का धाम
तिलों से जैसे रिसे, तेल का नाम।। मं॰ ।।१५।।

*प्राणापान
**स्वात्म भाव पूज्य, छुटे देह भाव
***वहां ही होवे

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

पहुँचेगा जब वीर सरन
इन्द्रियजयी भी ना जाने जहां गुप्त गमन
झझांवात से भटकें ज्ञानवान भी यहां।। मं॰ ।।१६।।

अब मन से दूर कर भय–विक्षेप
धोकर मनगण के सारे लेप
प्रज्वलित हों तो वही रत्नदीप।। मं॰ ।।१७।।

स्वयं को अर्पण कर परमेश्वर को
पहुंच जा अब मामलेश्वर को
प्रादिक्षणा कर वहां मन्दिर को।। मं॰ ।।१८।।

भृगुतीर्थ से अब स्वर्ग–द्वार
भेदभाव भूल कर जा क्यों विलम्ब यहां
भावना फूलों से कर अर्चना।। मं॰ ।।१९।।

रेन्जल में छोड़ यह दुर्गम–पथ
यहां आकर अब ना भटक
धर्मकर्म के हैं यह सारे फल।। मं॰ ।।२०।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

कण्ठदेश में जो है चौदह भवन
नीलगंगा से पहुंच अब वावजन
वहां से आगे करें पवन ही गमन।। मं॰ ।।२१।।

और भी बीच में है बहुत स्थान
संक्षेप में कहें तो समझ इन्हें
न कुछ करना ही है यहां क्रिया।। मं॰ ।।२२।।

जितना आवश्यक है उतना कहा
कहां कहां तक करले कोई बखान
थक जाये तो कहे चलूं न आगे अब।। मं॰ ।।२३।।

ईशदेश में उत्तम शेषनाग
हो सके तो दिन रात वहीं जाग
राग छोड़ और प्राप्त कर महा वैराग्य।। मं॰ ।।२४।।

त्याग पांच* कर पंच तरणी पर
वहां ही सातों सागरों की तरंग
पदमनाभ के हैं यह भी रंग।। मं॰ ।।२५।।

*काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

संभल संभल कर अब चढ़ पंचाल पर
सोऽहम से भैरव बाल पर
क्षति न पंहुचे यहां लक्ष्य पर।। मं॰ ।।२६।।

होश में रह जिन्दा ही मर
गर्भयात्रा को पार कर
सती को मिले वहां शिव ही वर।। मं॰ ।।२७।।

शुद्ध कर संकल्प से तू मन
स्थान समय के देश काल नाम से दूर तू बन
इष्ट [illegible] से शांत तू बन।। मं॰ ।।२८।।

परा पश्यन्ति न पहुंचे जहा
मध्यमा वैखरी वहा कहा
तप ऋषियों की दौड वहा।। मं॰ ।।२९।।

भावना से कर अमरावती स्नान
मल ले भभूत छोड़ दे गृहस्थ भाव
शिव चरणों पर आत्म अर्पण।। म॰ ।।३०।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

रहे भीतर में शुद्ध–बुद्धिमान
बुद्धि भी दे, सिद्धि तमाम
घटे बढ़े नही आकाश समान।। मं॰ ।।३१।।

जिसकी प्रतिभा है वटुकनाथ
जिसके है भैरव वैताल साथ
हिम विग्रह स्वयं वह बना।। मं॰ ।।३२।।

नंग धढ़ंग तू भी रह वहीं
ईश्वर दर्शन से शब्द सुन
लय हो जा ध्यान परम धाम पर।। मं॰ ।।३३।।

इस गुफा से पहुंच उस गुफा
छोड़ दे सब देवी देवता
भभूत मला है विभूति पा।। मं॰ ।।३४।।

पत्थर भीतर ही है भैरव छिपा
शून्य का रहस्य भी है वहां
देह जंगल में तप सजा।। मं॰ ।।३५।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

सोऽहं शब्द प्रेम से कह
अज्ञान शिखिर पर केन्द्रित रवि
उडे कबूतर वहीं शीर्ष पर।। मं॰ ।।३६।।

सहस्त्र दल में लय हो गति प्राप्त,
ब्रह्मरन्ध्र का निष्कल स्वभाव
दम के दमादम से हो विकास।। मं॰ ।।३७।।

चलता सांस करता है मन्थन
धर है जहां ठहरे श्रीमान्
वहां जाग समाधि एक समान।। मं॰ ।।३८।।

अपना ही आप स्वयं में लय
समरुप बन कर आप ही लय
जलती प्रेम आग प्रेम में लय।। मं॰ ।।३९।।

महाकाल को भी यह न प्राप्त हुआ
मिला उनको जिनको अनुभव मिला
स्वयं स्वयं परमात्मा बना।। मं॰ ।।४०।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

चलता वहां इक अनाहद नाद
स्वपन का अंत बने शुरू समाध
तुर्या तुर्यातीत है जहां समान।। मं॰ ।।४१।।

जिसमें जोगी आ पड़ा
जागृत स्वप्न पिंगला इड़ा
उतरा वहां कोई न चढ़ा।। मं॰ ।।४२।।

भौंरा कमल में जब अडा
अपना ही आप न कड़ा
और स्थान वहां कोई न पड़ा।। मं॰ ।।४३।।

लोट के आये तो हैं संगम
रस पूरणमय है यह स्थल
वहीं सभी करे श्राद तर्पण।। मं॰ ।।४४।।

छोड़ के गुफा अब शिव के लिये
उस बिन तुम्हें कोई क्यों सूझे
स्वयं को अर्पण किया है तूने।। मं॰ ।।४५।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

शिव शिव ध्यान से अब न टल
पुरुष पर प्रकृति का न चढ़ा चर्म
कर चतुर कार्य, माया को छल।। मं॰ ।।४६।।

जब जाने तू सब कुछ है यह शिव
रहे ना पाप बने तू ही शिव
भव–सर से तारे नाम शिव शिव।। मं॰ ।।४७।।

आवागमन क्षण मात्र जान
ज्ञानी ही देखे यह यात्रा
सब कहे अपनी ही वार्ता।। मं॰ ।।४८।।

तृप्त नौ द्वार पहुंच अब नौदल
बाधा मिटे जन्म जन्मों की
देह यात्रा हो जाये सफल।। मं॰ ।।४९।।

देह को कहा है देव द्वार
संसार जंगल का देवदार
ज्ञान कर ज्ञान जान, देह उद्धार।। मं॰ ।।५०।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

फिर कहाँ आना जाना त्रिभुवन
पहुंच कर अब विष्णु भवन
यमला–कमला तीर्थ–भवन।। मं। ।।५१।।

फूटे जहां जल निर्मल उज्जवल
नित्य नियमित यहां भवानीबल
सावधान बन पहुंच भवानी बल।। मं। ।।५२।।

चरण पूज्य भर्गादेवी के है स्वर्ग सीढ़ी
चमके सोऽहं प्रकाश मिटे अंधेरी
समाप्त हो जन्म जन्म के बखेड़े।। मं। ।।५३।।

भर्गा को नवदुर्गा ही मान
स्वर्गवासी भी करे उसे नमन
इष्ट देवी वही अपनी प्रमाण।। म। ।।५४।।

देवी वही पार्वती सती
मां जिसकी कहे मीनावती
शिव उसे वरने आया वहीं।। मं। ।।५५।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGangotri

शिव शक्ति एक नाम रूप भिन्न
स्वयं समझ क्या प्रकट कहे
परमानन्द ही स्वयं बने।। मं॰ ।।५६।।

हे देवी! मुझ पर दया कर
कर्म फलं देखे बिना ही मुझे वर
हे नीलकण्ठ! पाप शाप हर ।।५७।।
मन स्थिर कर पूज प्रभु ।।५७।।

मन्त्र पर शिव शम्भू
मन स्थिर कर पूज प्रभु।
मन्त्र पढ़ शिव शम्भू
मन स्थिर कर पूज प्रभु।।

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

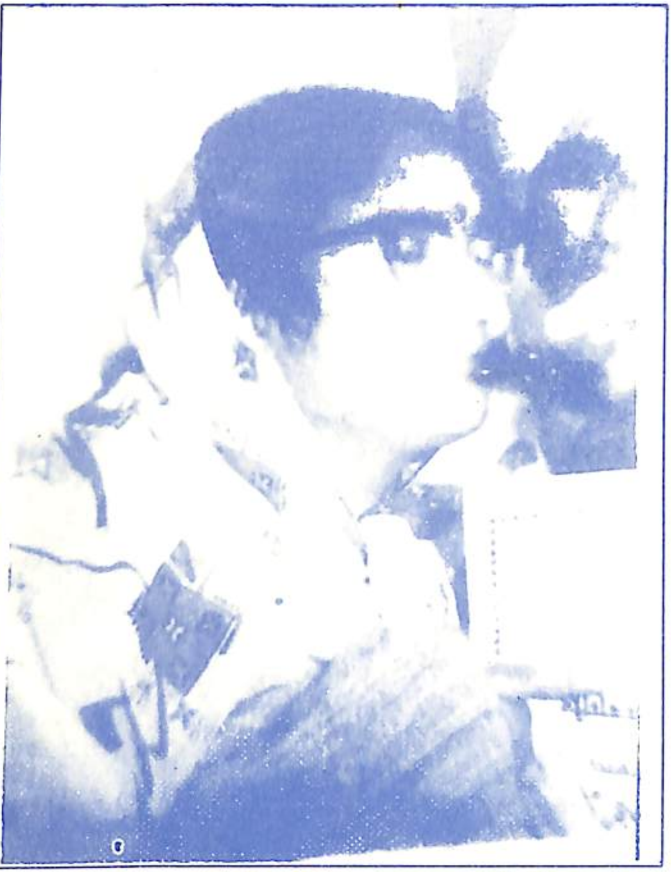

गुरुवर्य सुश्री प्रभा देवी जी के कर-कमलों में समर्पित

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri

मूद्रक: डच प्रिंटर्ज, 24, नज़दीक बस अड्डा, पिन्जौर, दूरभाष: 21539

CC-0. Ishwar Ashram Trust. Digitized by eGagotri